# श्रीहित ब्याहुला विलास

खेलत रास दुलहिनी-दूलहु।
सुनहु न सखी सहित ललितादिकए निरखि-निरखि नैंननि किन फूलहु।।
अति कल मधुर महा मोंहन धुनिए उपजत हंस-सुता कैं कूलहु।
थेई-थेई वचन मिथुन मुख निसरतए सुनि-सुनि देह दसा किन भूलहु।।
मृदु पदन्यास उठत कुमकुम रजए अद्भुत बहत समीर दुकूलहु।
कबहुँ श्याम श्यामा- दसनांचल कच-कुच हार छुवत भुज मूलहु।।
अति लावण्य रूप अभिनव गुनए नाहिंन कोटि काम समतूलहु।
भृकुटि विलास हास रस वरषत जैश्रीहित हरिवंश प्रेम रस झूलहु।।

सखियन के उर ऐसी आई। ब्याह विनोद रजैं सुखदाई।।
यहै बात सबके मन भाई। आनन्द मोद बढयौ अधिकाई।।
बढयौ आनन्द मोद सबकैं महा प्रेम सुरँग रँगी।
और कछु न सुहाइ तिनकौं युगल सेवा सुख पगी।।
निशि द्यौस जानत नाहिं सजनी एक रस भीजी रहैं।
गोप गोपिनु आदि दुर्लभ तिहि सुखहि दिन प्रति लहैं

यह नव दुलहिनि अति सुकुमारी। ये नव दूलहु लाल बिहारी।
रँग भीने दोउ प्राणनि पियारे। नव सत अंगन सिंगारे।
नव सत सिंगारे अंग अंगन झलक तनकी अति बढ़ी।
मौर-मौरी सीस लोहैं मैन पानिप मुख चढ़ी।
जलज सुमन सु सेहरे रचि रतन हीरे जगमगैं।
देखि अद्भुत रूप मनथ कोटि रति पाँयन लगैं।।2।।

शोभा मंडप कुंजन द्वारैं। हित की बाँधी बंदनवारैं।।
कुमकुम सों लै अजिर रचना बहु करी।
आय दोउ ठाढे भये तहाँ सबन की गति मति हरी।।
सुरंग मँहदी रंग राचे चरण कर अति राजहीं।
विविध रागनि किंकिनी अरू मधुर नूपुर वाजहीं।।3।।

वेदी सेज सुदेश सुहाई। मनदृग अंचल ग्रन्थि जुराई।
रीति भाँति विधि उचित बनाई। नेह की देवी तहाँ पुजाई।।
पूजि देवी नेह की दोउ, रति-विनोद बिहारहीं।
तिहि समै सखी ललितादि हित सौं हरि प्राणन वारहीं।

एक वैस सुभाव एकै सहज जोरी सोहनी।
एक डोरी प्रेम की ध्रुव बँधे मोहन-मोहनी!!4!

श्रीवृन्दावन धाम रसिक मन मोहई।
दूलहु-दुलहिन ब्याह सहज तहाँ सोहई।।1।।
नित्य सहाने पट अरू भूषण साजहीं।
नित्य नवल सम वैस एक रस राजहीं।।2।।
सोभा कौ सिरमौर चंद्रिका मोर की।
बरनी न जाई कछू छबि नवल किशोर की।।3।।
सुभग माँग रँग रेख मनौ अनुराग की।
झलकत मौरी सीस सुरंग सुहाग की ।।4।।
मणिनु खचित नव कुंज रही जगमग जहाँ।
छबि कौ बन्यौ बितान सोई मंडप तहाँ।।5।।
बेदी सेज सुदेस रची अति बानि कै।
भाँति-भाँति के फूल सुरंग बहु आनि कै।।6।।
गावत मोर मराल सुहाए गीत री।
सहचरि भरीं आनन्द करत रस रीति री।।7।।
अलबेले सुकुँवार फिरत तिहि ठाँव री।

दृग अंचल परी ग्रन्थि लेत मन भाँवरी।।8।।

कँगना प्रेम अनूप कबहुँ नहिं छूटही।

पोयौ डोरी रूप सहज सो न टूटही।।9।।

रचि रहे कोमल कर अरू चरण सुरंग री।

सहज छबीले कुँवर निपुन सब अंग री।।10।।

नूपुर कंकण किंकिणी बाजे बाजहीं।

निर्तत  कोटि अनंग नारि सब लाजहीं।।11।।

बाढयौ है मनमाहिं अधिक आनन्द री।

फूले फिरत किशोर वृन्दावन चन्द री।।12।।

सखियन किये बहु चार अनेक विनोद री।

दूधा भाती हेत बढयौ मन मोद री।।13।।

ललित लाल की बात जबहि सखियन कही।

लाज सहित सुकुमारि ओट पट दै रही।।14।।

नमित ग्रीव छबि सींव कुँवरि नहिं बोलहीं।

बुधि बल करत उपाय घूँघट पट खोलहीं।।15।।

कनक कमल कर नील कलह अति कल बनी।

हँसत सखी सुख हेरि सहज सोभा घनी।।16।।

बाम चरण सौं सीस लाल कौ लावहीं।

पानी वारि कुँवरि मुसकाइ अधिक सुख पावहीं।।17।।

मेलि सुगंध उगार सो बीरी खबावहीं।

समझि कुँवरि मुसकाइ अधिक सुख पावहीं ।।18।।

और हास-परिहास रहसि रस रँग रह्यौ।

नित्य विहार विनोद यथा मति कछु कह्यौ।।19।।

अंचल ओट असीस सखी सब देंहि री।

पल-पल बढ़ौ सुहाग नैन सुख लेहिं री।।20।।

जैसें नवल विलास नवल नवला करैं।

मन-मन की रूचि जान नेह बिधि अनुसरैं।।21।।

बैठी है निज कुंज कुँवरि मन मोहिनी।

झलकत रूप अपार सहज अति सोहनी।।22।।

चाहि-चाहि सो रूप रसिक सरिमौर री।

भरि आए दोऊ नैन भई गति और री।।23।।

अति आनँद कौ मोद न उरहि समात री।

रीझि-रीझि रस भीजि आपु बलि जात री।।24।।

अरूझे मन अरू नैन बढयौ अनुराग री।

एक प्राण द्वै देह नागर अरू नागरी।।25।।

यौं राजत दोऊ प्रीतम हँसि मुसिकत री।

निरखि परस्पर रूप न कबहूँ अघात री।।26।।

तिनही के सुख रंग सखी दिन रँगमगीं।

और न कछू सुहाइ एक रस सब पगीं।।27।।

उभय रूप रससिंधु मगन जहाँ सब भाए।

दुर्लभ श्रीपति आदि सोई सुख दिन नए।।28।।

हित ध्रुव मंगल सहज नित्य जो गावही।

सर्वोपरि सोई होइ प्रेम रस पावही।।29।।2।।

## (असीस कौ पद)

लाड़ी जू थारो अविचल रहौ जी सुहाग।

अलग लड़े रिझवार छेल सों नित नव बढ़ौ अनुराग।।

यौं नित विहरौ ललितादिक सँग वृन्दावन निजु बाग।

(जयश्री) रूप अली हित युगल नेह लखि मानत निजु बड़भाग।।